License Information

Study Notes (Biblica) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

Study Notes (Biblica)

गिनती 1:1–5:4

इस्राएल के लोग सीनै पर्वत पर दो वर्षों तक डेरा डाले रहे। जब वे वहां थे तब उन्हें दिए गए परमेश्वर के निर्देश निर्गमन और लैव्यव्यवस्था में दर्ज हैं।

गिनती में दर्ज परमेश्वर के निर्देश सीनै पर्वत छोड़ने की तैयारी के बारे में थे। मूसा, हारून और इस्राएल के 12 गोत्रों के अगुवों ने लोगों की गिनती की।

पहले उन्होंने 20 वर्ष या उससे अधिक आयु के पुरूषों की गिनती की। ये वे पुरूष थे जो युद्ध में लड़ सकते थे। मूसा ने 30 से 50 वर्ष के लेवी पुरूषों की गिनती की। मूसा ने लेवी के गोत्र में एक महीने या उससे अधिक आयु के लड़कों की भी गिनती की।

फिर उन्होंने अन्य गोत्रों में सबसे बड़े पुत्रों की गिनती की। सभी इस्राएली पुरूष जो अपने परिवार में पहिलौठे थे, वे परमेश्वर के थे। इसका कारण निर्गमन 11:1 – 13:16 में समझाया गया था। इसका यह अर्थ नहीं था कि परमेश्वर इस्राएलियों से बच्चों की बलि चाहते थे। इसके बजाय, लेवी पुरूष अन्य गोत्रों के सबसे बड़े पुत्रों के स्थान पर थे। उन्होंने ऐसा परमेश्वर की सेवा के लिए अलग किए जाने के द्वारा किया।

हारून के परिवार के लेवी पुरूषों को परमेश्वर की सेवा करने के लिए याजक के रूप में अलग किया गया था। अन्य लोग पवित्र तम्बू के विभिन्न हिस्सों की देखभाल करने के लिए ज़िम्मेदार थे।

पवित्र तम्बू इस्राएली शिविर के केंद्र में था। गोत्र उसकी चारों ओर क्रम में व्यवस्थित थे। सबसे पहले लेवी गोत्र के लोग थे, जो पवित्र तंबू के सबसे निकट शिविर में रहते थे। फिर यहूदा गोत्र आता था। वे प्रमुख गोत्र थे और उनके पास सबसे अधिक सैनिक थे। उसके बाद अन्य इस्राएली गोत्र थे।

जिन लोगों को अशुद्ध माना जाता था, वे तम्बू के पास नहीं आ सकते थे। वे शिविर में भी नहीं रह सकते थे। इससे इस्राएलियों को याद दिलाया गया कि परमेश्वर पवित्र है और उनके साथ उपस्थित थे।

गिनती 5:5–6:27

इस्राएलियों को उनके कार्यों और उनके शब्दों के लिए ज़िम्मेदार ठहराया जाना था। जब किसी ने किसी और के साथ कुछ गलत किया, तो यह एक गंभीर मामला था। उन्हें उस व्यक्ति को वापस भुगतान करना पड़ता था जिसके खिलाफ उन्होंने पाप किया था और अतिरिक्त भुगतान भी करना पड़ता था।

परमेश्वर ने समझाया कि दूसरों के खिलाफ पाप करने से पाप करने वाले व्यक्ति और परमेश्वर के बीच के रिश्ते को नुकसान पहुंचता है। यह दिखाता था कि वह व्यक्ति परमेश्वर के प्रति विश्वासयोग्य नहीं था। जब उन्होंने पश्चाताप किया और अपने पाप से दूर हो गए, तब उनका परमेश्वर के साथ संबंध ठीक हो गया। उन्होंने बलिदान के रूप में एक मेढ़ा चढ़ाया ताकि यह दिखा सकें कि उन्होंने पश्चाताप किया है। मेढ़े की मृत्यु ने उनके पाप का प्रायश्चित किया। इसका अर्थ है कि इसने व्यक्ति के पाप का भुगतान किया।

एक और गंभीर मामला तब था जब पति और पत्नियाँ एक-दूसरे के प्रति विश्वासयोग्य नहीं थे। पुरूषों के लिए विश्वासयोग्य रहना उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि महिलाओं के लिए। उस समय में यह जानना कठिन था कि किसी व्यक्ति ने विश्वासघात किया था या नहीं। महिलाओं पर अक्सर गलत तरीके से विश्वासयोग्य न होने का आरोप लगाया जाता था। इसलिए परमेश्वर ने एक तरीका प्रदान किया जिससे महिलाएँ दिखा सकें कि वे दोषी नहीं थीं। यह प्रथा जादू नहीं थी। यह दिखाता था कि परमेश्वर उन लोगों के खिलाफ न्याय लाएंगे जो विवाह में विश्वासयोग्य नहीं थे।

यह भी एक गंभीर मामला था जब लोगों ने परमेश्वर से वादा किया। यह नाज़ीर होने के निर्देशों में स्पष्ट था। लोगों के प्रति याजकों के शब्द भी एक गंभीर मामला था। परमेश्वर ने उन्हें आशीष के वचनों से बोलने की आज्ञा दी। याजकों के शब्द इस्राएलियों को यह विश्वास करने में मदद करने थे कि परमेश्वर उनके साथ है। परमेश्वर चाहते थे कि वे विश्वास करें कि वह उनकी परवाह करते हैं और उनके लिए शांति प्रदान करते हैं।

गिनती 7:1–8:26

निर्गमन अध्याय 35 से 39 में वर्णन किया गया है कि कैसे इस्राएलियों ने पवित्र तम्बू का निर्माण किया। उन्होंने तम्बू के बारे में परमेश्वर के निर्देशों का पूरी तरह पालन किया।

लेकिन तम्बू का उपयोग परमेश्वर की आराधना के लिए किया जा सके, कई सामग्रियों की आवश्यकता थी। गिनती में दर्ज है कि कैसे इस्राएलियों ने इन सामग्रियों को इकट्ठा करने में परमेश्वर की पूरी तरह से आज्ञा मानी।

लेवी को छोड़कर सभी गोत्रों के अगुवे समान मात्रा में सामग्री लाए। इससे यह दिखाया गया कि सभी गोत्र महत्वपूर्ण थे, चाहे वे बड़े हों या छोटे।

लेवी लोग सामग्री नहीं लाए। लेवी स्वयं परमेश्वर के लिए एक भेंट थे। लेवी पुरुषों के पास पवित्र तम्बू में काम करने का दायित्व था। वे यह काम 25 वर्ष की आयु से लेकर 50 वर्ष की आयु तक करते थे।

जब पवित्र तम्बू स्थापित हो गया, तब परमेश्वर ने वहाँ मूसा से बात करना शुरू किया। मूसा ने परमेश्वर की आवाज को वाचा के सन्दूक के ऊपर से सुना। जो बादल तम्बू को ढके हुए था, वह दिखाता था कि परमेश्वर वहाँ उपस्थित थे।

गिनती 9:1–10:36

याजकों को इस्राएलियों को संदेश देने के लिए चांदी की तुरहियाँ बजानी थीं।

परमेश्वर ने कहा कि वह ध्वनि उन्हें इस्राएलियों की याद दिलाएगी। इसका यह अर्थ नहीं था कि परमेश्वर कभी-कभी उन्हें भूल जाते थे। यह इस बात का वर्णन था कि परमेश्वर अपने लोगों (परमेश्वर के लोग) पर कितना ध्यान देते हैं। वह हमेशा उनकी देखभाल करते हैं। वह यहां तक कि उन ध्वनियों को भी सुनते हैं जो वे निकालते हैं।

सीनै पर्वत के आसपास के रेगिस्तान को छोड़ने से पहले, इस्राएलियों ने फिर से फसह का पर्व मनाया।

बाहरी लोग जैसे होबाब पर्व (पर्वों) में भाग ले सकते थे यदि वे चाहते।

फिर गोत्र सीनै से चल पड़े। उन्होंने परमेश्वर की पूरी तरह से आज्ञा का पालन किया और उसी क्रम में छावनी छोड़ी जैसा कि परमेश्वर ने उन्हें बताया था। ऐसा करने का चिन्ह तब था जब बादल पवित्र तम्बू के ऊपर से चलने लगा।

गिनती 11:1–14:45

बहुत से इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध बोला और उनकी आज्ञा का पालन नहीं किया। उन्होंने जीवन की कठिनाइयों और अपने भोजन के बारे में शिकायतें की। उन्होंने मूसा के अगुवे होने के बारे में भी शिकायत की। यहाँ तक कि मिर्याम और हारून ने भी मूसा के विरुद्ध बोला।

शिकायत करने से यह स्पष्ट हुआ कि परमेश्वर की प्रजा नहीं चाहती थी कि परमेश्वर उनके परमेश्वर बनें। वे चाहते थे कि परमेश्वर ने उन्हें मिस्र में दास होने से न बचाया होता। उन्होंने उन तरीकों को स्वीकार नहीं किया जिनसे परमेश्वर ने उन्हें बचाया और उनके लिए प्रबंध किया।

परमेश्वर को स्वीकार करने से इनकार करने के कारण परमेश्वर उनके विरुद्ध न्याय लाए। उन्होंने इस्राएलियों के बीच आग, महामारी और रोग भेजा। फिर भी परमेश्वर ने उन सबको नष्ट नहीं किया। वे अपने लोगों के साथ धैर्यवान थे और उन्हें क्षमा किया।

परमेश्वर ने 70 अगुवों के साथ पवित्र आत्मा की सामर्थ साझा की। उन्होंने ऐसा इसलिए किया ताकि वे मूसा की सहायता कर सकें। लेकिन परमेश्वर ने मूसा के बारे में एक बात स्पष्ट कर दी। जैसा मूसा परमेश्वर के निकट थे वैसे कोई अन्य मनुष्य नहीं था।

मूसा ने 12 जासूसों को कनान देश की जाँच करने के लिए भेजा। 12 में से केवल यहोशू और कालेब ने लोगों को परमेश्वर की आज्ञा मानने के लिए प्रेरित किया। लेकिन इस्राएलियों ने कनान में प्रवेश करने से मना कर दिया। यह कादेशबर्ने में हुआ।

इसका मतलब था कि वे परमेश्वर को नकार रहे थे। वे परमेश्वर के अब्राहम, इसहाक और याकूब के साथ की वाचा को नकार रहे थे।

इसका परिणाम यह हुआ कि इस्राएली 40 वर्षों तक जंगल में भटकते रहे। वे तब तक भटकते रहने वाले थे जब तक कि जिन्होंने कनान में प्रवेश करने से इनकार किया था, वे मर नहीं जाते। उसके बाद, उनकी संतानें भूमि की वाचा की आशीष प्राप्त करने वाली थी।

संख्याएं 15:1–19:22

परमेश्वर ने यह बहुत स्पष्ट कर दिया था कि लेवीय लोग उनकी सेवा के लिए अलग किए गए थे। उन्हें पवित्र तम्बू से संबंधित सभी चीजों की देखभाल करनी थी।

उन्होंने यह भी बहुत स्पष्ट कर दिया था कि हारून के परिवार के पुरूष वंशज ही याजक होंगे। वे बलिदानों और वेदी से संबंधित सभी चीजों के लिए जिम्मेदार थे। इसमें वह विशेष जल भी शामिल था जो लोगों और वस्तुओं को शुद्ध करता था।

लेवी और याजकों को भूमि नहीं मिलनी थी और न ही उन्हें पैसे से भुगतान किया जाना था। इसके बजाय, परमेश्वर ने उनके लिए अन्य इस्राएलियों द्वारा दी गई भेंटों से प्रबंध किया।

फिर भी कोरह और अन्य लेवी जो हारून के परिवार से नहीं थे, उन्हें परमेश्वर के नियम पसंद नहीं थे। वे याजक बनना चाहते थे। जब उन्होंने हारून के खिलाफ बोला, तो उन्होंने उस तरीके का विरोध किया जिससे परमेश्वर अपने लोगों की अगुवाई करते थे। परमेश्वर ने उन्हें इसके लिए मृत्यु दंड दिया।

अन्य इस्राएलियों ने मृत्यु के लिए मूसा और हारून को दोषी ठहराया। फिर भी मूसा और हारून इस्राएलियों की सेवा में विश्वासयोग्य बने रहे। बार-बार उन्होंने परमेश्वर से इस्राएलियों पर दया करने के लिए प्रार्थना की। परिणामस्वरूप, बार-बार परमेश्वर ने अपने लोगों को नष्ट न करने का निर्णय लिया।

परमेश्वर ने हारून की छड़ी से कलियाँ और फूल उत्पन्न किए। यह इस्राएलियों के लिए एक संकेत था कि उन्हें हारून और उनके पुत्रों का याजक के रूप में सम्मान करना चाहिए।

गिनती 20:1–24:25

इस्राएल के लोग जंगल में भटकते हुए शिकायत और बहस करते रहे। उन्होंने कहा कि गुलाम बने रहना या मर जाना बेहतर होता। वे इतने दु:खी थे।

लोगों को पानी की आवश्यकता थी। मरीबा में मूसा और हारून ने पूरी तरह से परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया कि वे पानी प्रदान करेंगे। उन्होंने बल प्रयोग करके चट्टान से पानी निकाला। इस कारण से, मूसा और हारून को कनान में प्रवेश करने की अनुमति नहीं दी गई थी।

एक और बार जब लोगों को पानी की ज़रूरत पड़ी, तो उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय एक बार फिर शिकायत की। इसलिए परमेश्वर ने कुछ वाचा के श्रापों को उन पर आने दिया। इसमें ऐसी बीमारी शामिल थी जो ठीक नहीं होती थी, जैसा कि व्यवस्थाविवरण 28:59–60 में बताया गया है। यह बीमारी जहरीले सांपों से थी। इसके परिणामस्वरूप कई लोग मारे गए। फिर भी जो लोग खंभे पर पीतल के सांप को देखते थे, वे बच गए। परमेश्वर ने अपने लोगों को चंगा करने के लिए उस सांप का उपयोग किया। यह उद्धार का एक चित्र था।

सैकड़ों साल बाद, यीशु ने स्वयं की तुलना उस सांप से की जिसे ऊपर उठाया गया था (यूहन्ना 3:14)। यद्यपि इस्राएलियों ने परमेश्वर के विरुद्ध बोला, परमेश्वर ने उन्हें आशीष देना जारी रखा। परमेश्वर ने उन्हें उन कनानियों पर विजय दी जिन्होंने उन पर आक्रमण किया। परमेश्वर ने उन्हें सीहोन और ओग के राजाओं पर विजय दी। परमेश्वर ने उन्हें मोआब के राजा बालाक से सुरक्षित रखा। परमेश्वर ने बिलाम को इस्राएलियों पर शाप देने की अनुमति नहीं दी। इसके बजाय, बिलाम ने आशीष के वचन बोले।

बिलाम की भविष्यवाणी तारा कहे जाने वाले किसी व्यक्ति, एक राजा और एक शासक के बारे में भी थी। कई वर्षों बाद लोगों ने समझा कि यह यीशु के बारे में भविष्यवाणी थी।

गिनती 25:1–31:54

बालाक ने मिद्यानियों के साथ मिलकर इस्राएलियों को रोकने की कोशिश की थी। उनकी बिलाम द्वारा इस्राएलियों पर श्राप देने की योजना सफल नहीं हुई। इसलिये बिलाम ने उन्हें सलाह दी कि इस्राएलियों को कैसे धोखा दिया जाए।

इस्राएली पुरूषों ने मोआब और मिद्यान की महिलाओं के साथ यौन पाप किए। फिर उन्होंने इन महिलाओं के साथ झूठे देवता जिसका नाम बाल था, उसकी उपासना करना शुरू कर दिया। ये बातें गलत थीं और परमेश्वर अपने लोगों पर न्याय लाए। परमेश्वर ने बालपोर नामक स्थान पर उनके खिलाफ एक महामारी भेजी।

पीनहास ने दिखाया कि वह इस बात को सुनिश्चित करने के लिए कितने प्रतिबद्ध थे कि इस्राएली परमेश्वर का सम्मान करें। बाद में परमेश्वर मिद्यानियों के विरुद्ध न्याय लाए जिन्होंने परमेश्वर की प्रजा को धोखा दिया था। इस्राएली सेना ने उन पर हमला किया और उनके नगरों को नष्ट कर दिया। बिलाम मारा गया।

बालपोर की महामारी ने एक महत्वपूर्ण समय को चिह्नित किया। यह वह समय था जब सभी इस्राएली जिन्होंने कनान में प्रवेश करने से इनकार कर दिया था, मर गए थे। इसके बाद लोगों की दूसरी बार गिनती की गई। उन्हें परमेश्वर से भेंट चढ़ाने और विशेष वायदों को करने के बारे में और निर्देश भी मिले। यहोशू को अलग किया गया और मूसा के बाद अगुवे के रूप में मान्यता दी गई। वह और एलीआजर लोगों की अगुवाई करेंगे जैसे मूसा और हारून ने किया था।

गिनती 32:1–36:13

मूसा ने उन सभी स्थानों की सूची लिखी जहाँ इस्राएली यात्रा कर चुके थे। फिर परमेश्वर ने उस भूमि की सीमाओं का वर्णन किया जो वे उन्हें दे रहे थे। इसे चिट्ठियाँ डालकर गोत्रों के बीच विभाजित किया जाना था।

प्रत्येक परिवार समूह को परिवार में कितने लोग हैं, इसके आधार पर भूमि प्राप्त होनी थी। यदि परिवार में कोई पुत्र नहीं हैं, तो पुत्रियों को भूमि दी जाती। यही स्थिति सलोफाद की बेटियों के साथ थी। जिन पुत्रियों को भूमि मिलती, वे अपने ही गोत्र के पुरूषों से विवाह करतीं। इस प्रकार भूमि गोत्र से बाहर नहीं जानी थी।

जो सीमाएँ परमेश्वर ने वर्णित की थीं, उनमें वे भूमि शामिल नहीं थीं जो इस्राएलियों ने सीहोन और ओग से ली थीं। फिर भी कुछ इस्राएलियों को यर्दन नदी के पूर्व में रहने की अनुमति दी गई। इसमें रूबेन और गाद के गोत्र और मनश्शे के आधे गोत्र शामिल थे।

इन गोत्रों के पुरुष अन्य गोत्रों के साथ कनान में प्रवेश करने वाले थे। वे वहां पहले से रह रहे लोगों को निकालने में उनकी सहायता करने वाले थे। फिर वे यरदन नदी के पूर्व में अपने घर लौट जाएंगे।

कनान को सभी अन्य गोत्रों के बीच विभाजित किया जाएगा, लेवी के गोत्र को छोड़कर। लेवियों को अन्य गोत्रों के क्षेत्रों में नगर और खेत प्राप्त होंगे। उनके छ: नगर शरण नगर होंगे।

इस्राएलियों की भूमि को पवित्र और शुद्ध माना जाना था। ऐसा इसलिए था क्योंकि पवित्र परमेश्वर उनके बीच निवास करना चाहते थे। लेकिन भूमि अपवित्र और अशुद्ध हो जाएगी यदि लोग हत्या करेंगे। यह भूमि इसलिए भी अपवित्र हो जाएगी यदि इस्राएली झूठे देवताओं की पूजा करें और केवल परमेश्वर की आराधना न करें। ऐसा तब होगा जब वे वहाँ पहले से रहने वाले कनानी लोगों को बाहर नहीं निकालेंगे।